ग्रामोभ्युदयादेव देशोभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 25	अंकः 55	बुलेटिन अवधिः 16 – 20 नवम्बर 2016	दिनः मंगलवार	दिनाँकः 15 नवम्बर 2016

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	16–11–2016	17–11–2016	18–11–2016	19–11–2016	20–11–2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	18	18	18	17	17
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	05	05	05	04	04
बादल आच्छादन	साफ	साफ	साफ	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	04	04	06	06	04
वायु की दिशा	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (8 से 14 नवम्बर, 2016 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ 0.0 मिमी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 17.7 से 21.8 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.3 से 8.1 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- गेहूँ की बुवाई करें। फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवष्य करें।
- गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।
- गेहूँ एवं जौ की बुवाई के तुरंत बाद या 3 दिन के अंदर उचित नमी की अवस्था में पेन्डीमेथिलीन 30 ईसी की 2.5 से 3.3 लीटर मात्रा को 750 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा बुवाई के 30–35 दिन बाद वैस्टा षखनाषी की 400 ग्राम दवा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जिससे एक वर्शीय घासकुल एवं कुछ चौड़ी पत्ति वाले खरपतवारों का नियंत्रण किया जा सके।

- ❖ किसान भाई अपने क्षेत्रों के लिए अनुमोदित प्रजातियों की ही बुवाई करें।
- ❖ जैविक खेती करने वाले किसान भाई सभी फसलों हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम + सोडोमोनास के 5–5 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। तथा पोशक तत्वों की पूर्ति वर्मीकम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद एवं जैव उर्वरक के द्वारा करें। भूमजनित बीमारियों की रोक–थाम के लिए 250ग्राम ट्राइकोडर्मा + 250 ग्राम सोडोमोनास जैव अभिक्रता से प्रति क्विंटल की दर से वर्मीकम्पोस्ट एवं गोबर की खाद को उपचारित कर एक सप्ताह के लिए छाया में रखें तथा बुवाई से पूर्व खेत में अच्छी प्रकार से मिला दें।
- ❖ दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20–25 दिन बाद और दूसरी 35–40 दिन बाद करें।
- ❖ चनें में सिंचित दषा में फ्लूक्लोरोलिन 1.7 लीटर अथवा ट्राईफलूरोलिन षाखनाषी की 1.5 लीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई से पूर्व छिड़काव करने से खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ षीतोश्ण फल वृक्षों में थाले बनाने का काम प्रारम्भ करें तथा पेड़ के तनों पर चूना + कॉपरऑक्सीक्लोराइड + अल्सी का तेल (30 कि0ग्रा0 चूना + 500 ग्राम कॉपरऑक्सीक्लोराइड + 500 मि0ली0 अल्सी का तेल + 100 लीटर पानी में) मिलाकर जमीन से 2–3 फीट की ऊँचाई पर तनों की पुताई करें।
- ❖ खाद, उर्वरक तथा अन्य रसायनों का प्रयोग कटाई–छटाई के उपरान्त षुरू करें।
- ❖ ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में सेब, नाषपाती, आडू, प्लम, खुमानी आदि षीतोश्ण फल वृक्षों में कटाई–छटाई षुरू करें।
- ❖ सेब एवं अन्य गुठलीदार फल पौधों को आगामी षीतऋतु में रोपण हेतु लेआउट तथा गढ्ढों की खुदाई का काम प्रारंभ करें।
- ❖ फासबीन की फसल में जहां पौधें सूख रहे हों उनकी जड़ो की कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी या ट्राइकोडर्मा 6–10 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- ❖ टमाटर की पत्तियों पर भूरे धब्बे दिखाई पड़ने पर उनके प्रबंधन हेतु मैनकोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ सिंचित घाटी क्षेत्रों में अरकिल मटर की बुवाई हेतु खेत की तैयारी के साथ–साथ बीज उपलब्धता सुनिष्चित करें तथा 10–12 दिनों में बुवाई करें।
- ❖ एग्रीफॉउन्ड लाइट रेड प्याज की किस्म का बीज क्रय कर सिंचित घाटी क्षेत्रों में पौधषाला में बुवाई करें। यदि वी0एल0 3 प्याज का बीज उपलब्ध हो सके तो उसकी बुवाई भी पर्वतीय क्षेत्रों में करें। ध्यान रहे पौधषाला उस स्थान पर तैयार करें जहाँ पूर्व में प्याज की पौध तैयार न की गई हो। साथ ही साथ बीज को थायराम नामक रसायन से उपचारित करें। रसायन की 2.5 ग्राम मात्रा 1 किलोग्राम बीज उपचारण हेतु पर्याप्त है।
- ❖ पॉलीहाउस के भीतर व बाहर यदि सब्जी राई का प्रतिरोपण किया गया हो तथा पत्ते बिक्री हेतु तैयार हैं तो उन्हें बाजार में बेचें। तद्पष्चात् सिचांई करें । सिंचाई के 1–2 दिन पष्चात् जब भूमि में नमी हो तो सायंकाल में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग हल्की मात्रा में करें।
- ❖ सिंचित घाटी क्षेत्रों में यदि राई की पौंध प्रतिरोपण हेतु तैयार है तो पॉलीहाउस या बाहर के वातावरण में उसका प्रतिरोपण 50ग40 से0मी0 फासलें पर करें।
- ❖ मटर को तना मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए कार्बोफ्यूरॉन 3 सी0जी0, 25 कि0ग्रा0 /है0 की दर से बुवाई के समय खाद व बीज के साथ जमीन में डालें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एच0सी0, 150मि0ली0/है0 या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एच0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से प्रयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0 /है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम /है0 की दर से प्रयोग करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ इस बदलते मौसम में नवजात पषुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पषुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- ❖ जिन पषुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पषुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पषुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- ❖ इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पषुषाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोषनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पषुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दषा में लगभग 50 प्रतिषत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औशधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पष्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पष्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर